बी० ए० भाग - तीन

द्वितीय प्रश्न-पत्र

प्रश्न — हिन्दी का अर्थ बताते हुए इसके नामकरण पर प्रकाश डालिए।

उत्तर -

हिन्दी का अर्थ — 'हिन्दी' फारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है 'हिन्द का'। 'हिन्द' शब्द में ईरानी का विशेषणात्मक प्रत्यय 'ईक' जुड़ने से 'हिन्दीक' शब्द निष्पन्न हुआ है। इसी 'हिन्दीक' शब्द का ~~विशेषणात्मक प्रत्यय 'ईक' जुड़ने से 'हिन्दीक' शब्द~~ विकास क्रमानुसार में 'हिन्दी' शब्द के रूप में हुआ। वस्तुतः 'हिन्दी' शब्द 'सिन्धु' का प्रतिरूप है। इसका अपना एक इतिहास है।

भारत के साथ ईरान का सम्बन्ध बहुत पुराना है। आर्यों के आगमन से भी पूर्व यह सम्बन्ध स्थापित हो चुका था। ज्योतिष एवं पौराणिक कथाओं के आधार पर यह प्रमाणित हो चुका है कि ईरान का भारत के साथ व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध अत्यन्त गहरा था। सम्भव है आर्यों के भारत-भूमि पर स्थापित होने के बाद से उक्त सम्बन्ध में और भी प्रगाढ़ता आयी हो।

ऐतिहासिक दस्तावेजों से यह भी संकेत मिलता है कि ५००ई०पूर्व में दारा प्रथम के शासन काल में सिन्धु नदी का पश्चिमोत्तर तटीय प्रदेश ईरानियों के अधीन

था। कहा जाता है कि उस समय यज्ञ कराने वाले पुरोधा भारत से ईरान और ईरान से भारत आया-जाया करते थे। इसी प्रसंग में शाकद्वीप के 'मग' ब्राह्मण फारस के पूर्वोत्तर सीमा प्रान्त से होकर भारत में आये और यहाँ बस गये जिन्हें आज 'शाकलद्वीपी' ब्राह्मण कहा जाता है।

आवागमन के इसी क्रम में 'सिन्धु' शब्द फारस में पहुँचा। चूँकि संस्कृत की 'स' ध्वनि फारसी में 'ह' उच्चरित होती है इसलिए 'सिन्धु' शब्द वहाँ 'हिन्दु' के रूप में प्रचलित हुआ।

प्राचीन ईरानी साहित्य में 'हिन्दुश' हिन्दु, हिन्दुवज, आदि का प्रयोग भी प्रायः इन्हीं अर्थों में हुआ है। इसप्रकार 'हिन्दु' शब्द में थोड़ा आर्थिक-विकास तो हुआ ही ध्वनिक विकास भी हुआ, जो इसमें 'इ' पर बलाघात होने के कारण 'उ' लुप्त हो गया है और 'हिन्दु' से 'हिन्द' हो गया। कालान्तर में हिन्द शब्द भारत का वाचक बन गया।

भाषा के अर्थ में हिन्दी का प्रयोग—

भाषा के लिए 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम ईरान में ही प्रारम्भ हुआ। दसवीं शताब्दी में ही भारतीय भाषाओं के लिए 'जबान ए हिन्दी' शब्द का प्रयोग वहाँ

आरम्भ हो गया था। ईरान के सुप्रसिद्ध बादशाह नौशेरवाँ (531-579ई०) ने अपने दरबार के विद्वान 'हकीम बजरोवा' को पंचतन्त्र का अनुवाद करने के लिए भारत भेजा था। नौशेरवाँ के मन्त्री बुजर्ज मिहिर ने इसकी भूमिका में लिखा है कि - इसका अनुवाद 'जबान ए हिन्दी' से किया गया।

भारतीय भाषा के लिए हिन्दी का यह लिखित रूप से सम्भवतः पहला प्रयोग था। चूँकि पंचतन्त्र संस्कृत का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इसलिए निःसन्देह 'जुबान ए हिन्दी' का प्रयोग संस्कृत के लिए ही किया गया है। 'तबकाते- नासिरी' में 'जबान ए हिन्दी' का भारतीय भाषाओं के लिए ही प्रयोग हुआ है। इब्नबतूता ने भी अपने 'रेहला इब्नबतूता' में तारनगर के सम्बन्ध में लिखा है कि 'किताब अलाबाज अलजदरात बिल हिन्दी' अर्थात वहाँ की दीवारों पर 'हिन्दी' में लिखा था।

तैमूरलंग के पोते के काल (15 शर्ई) में शरफुद्दीन यज्दी तैमूर और उसके परिवार के विषय में 'जफरनामा' ग्रन्थ लिखा जिनमें एक प्रसंग में कहा गया कि 'राव' हिन्दी शब्द है। सम्भवतः विदेशों में 'हिन्दी' भाषा के लिए 'हिन्दी' शब्द का प्रथम प्रयोग था।

भारत में भी भाषा के रूप में 'हिन्दी' शब्द के प्रयोग का श्रेय मुसलमान कवियों को ही जाता है।

सर्वप्रथम हिन्दी शब्द का प्रयोग संस्कृत के लिए हुआ था।

उपर्युक्त सन्दर्भों से स्पष्ट है कि मुसलमानों ने पहले भारत के मुसलमानों को 'हिन्दी' कहा और बाद में यहाँ की भाषा को 'जबान ए हिन्दी' कहा। फिर हिन्दी शब्द चल पड़ा। आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इसे आर्यभाषा भी कहा है।

निष्कर्षतः अपने विस्तृत अर्थ में हिन्दी उसी प्रकार हिन्दी की भाषा है जिस प्रकार जापानी जापान की एवं 'रूसी' रूस की। अपने संकुचित अर्थ में हिन्दी सम्पूर्ण उत्तर भारत की भाषा के रूप में जानी जाती है। भाषावैज्ञानिकों का वर्ग बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब और हिमाचल प्रदेश के विस्तृत भू-भाग को हिन्दी प्रदेश मानता है और उस क्षेत्र की भाषा को 'मैं हिन्दी' कहते हैं।

दूसरा वर्ग शासन प्रशासन एवं साहित्य तथा शिक्षा हेतु स्वीकृत 'हिन्दी' को ही देश की राष्ट्रभाषा मानता है। इनका आधार खड़ीबोली है।

अंतः हिन्दी भारत की राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा थी भी है। आज हिन्दी हमारी राष्ट्रीयता है, हमारी भाषा है, हमारी जाति है और हमारी संस्कृति एवं सभ्यता की पहचान भी है।

23/01/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया